RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 42 अंक 1 हल्द्वानी सम्वत् 2083 सोमवार 8 जून 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

स्थापना के 49 वें वर्ष में प्रवेश

गीता उप्रेती

इस अंक के साथ ही 'पिघलता हिमालय' अपनी स्थापना के 49वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। समाचार विचार का यह केवल सिलसिला नहीं बल्कि उनको तक समाचार बनाने की शुरुआत इसमें हुई है जिन्हें हाशिये पर धकेल दिया गया था। उस इतिहास और भूगोल को बार-बार बनाने की कोशिश 'पिघलता हिमालय' ने की है जो बताया जाना चाहिये।

मीडिया के नये चलन में सबकुछ आसान लगता है क्योंकि जिस प्रकार से मोबाइल से अपना फोटो खींचकर सोशल मीडिया पर अपलोड किया जाता है वह आसान है। लेकिन मीडिया क्या परोस रहा है? समाज के लिये कितना जागरूक है, क्या इसका कार्य केवल चटपटी और अपराध जगत की सूचनाएं प्रचारित करना है, क्या एकतरफा बात करनी है? नहीं। मीडिया वह दर्पण है जो हमें हामारी माटी से जोड़े, सच के साथ चलने को कहे, गड़बड़ी होने पर चौकन्ना करे, मेहनती लोगों को प्रदर्शित करे।

48 वर्ष पूर्ण 49 वें वर्ष में प्रवेश करते हुए हम कह सकते हैं- इतनी लम्बी दूरी तय करना आसान नहीं था, वह भी ऐसे दौर में जब लगातार घटनाक्रम बदलते जा रहे हों। ऐसी दूरियां संकल्प होने पर ही पूरी की जा सकती हैं। अपने नाम के अनुरूप हमारा यह सन्देश भी है कि हिमालय हमें दृढ़ बनाता है। विज्ञान के इस युग में भी हिमालयवासी अपनी साध और साधना के बल पर मुकाम पाते रहे हैं। माँ नन्दा का आशीर्वाद हिमालय की दुर्गमता चखने वालों को हमेशा मिलता रहेगा। इसी दृढ़ता के साथ पिघलता हिमालय जन-जन की आवाज बन पाया है। आने वाला समय अत्यधिक कठिन है क्योंकि पत्रकारिता जैसे पवित्र कार्य को पीतपत्रकारिता की दिशा में धकेलने वाले कम नहीं हैं। इसको घेरने के लिये हर क्षण राजनीतिक दबाव होने लगे हैं। तमाम तरह के प्रलोभन हो सकते हैं परन्तु अपने मिशन पर चलने के लिये 'पिघलता हिमालय' दृढ़ है। यह सामाजिक, सांस्कृतिक पत्र के रूप में दिशा देने का कार्य करता रहेगा।

ऐसे समय में जब हर क्षण होने वाली घटनाओं के साथ अफवाहों का डेरा चारों ओर फैला हुआ है। पत्रकारिता की आड़ में गिरोहबाजियाँ देखने को मिल रही हों, मिशन की पत्रकारिता पर सोचना भी कठिन है। लेकिन 'पिघलता हिमालय का संकल्प ही है कि एक लम्बी दूरी तय हुई है। इन वर्षों में अपने हिमालय, अपने समाज, इतिहास, भूगोल, कला संस्कृति पर जितना लिखा गया है वह एक दस्तावेज है।

1978 में स्थापित 'पिघलता हिमालय' ने संकल्प लिया था कि वह हिमालय की आवाज बनकर अपने मिशन पर चलेगा। स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया-स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती और उसके बाद स्व.कमला उप्रेती ने जिस भाव से हर विपरीत परिस्थितियों में इसे नियमित बनाये रखा, उसी धारा में यह समचार पत्र नियमित रूप से है। आज की चाटुकार पत्रकारिता में पत्र और पत्रकार की विश्वसनीयता पर सवाल उठाये जाने लगे हैं। प्रिंट मीडिया को इलेक्ट्रानिक मीडिया और सोशल मीडिया से भिड़ना सा पड़ रहा है। पत्रकार होने का दम्भ भरने वाले सही को भी डरा रहे हैं। अपने आडम्बर के लिये सही-गलत की पहचान नहीं कर पा रहे हैं। हर पल की खबरों का ऐलान करते कई पत्रकार चौराहों पर खड़े हैं। कारोबारी, कामकाजी, अधिकारी-कर्मचारी, नेतागण सब सहमे हैं कि कौन किस रूप में ब्लैकमेलिंग करने लगे। इन सबसे बचते हुए अपने स्थापित मूल्यों की पहचान बनाने में हमें सुधी पाठकों का भरपूर सहयोग है। हमारे संरक्षण श्रीमान मंगल सिंह मर्तोलिया, श्रीमान फली सिंह दताल, डॉ. पंकज उप्रेती, हमारे विचारवान लेखकगण, समाचार संकलन में सहयोगी, समाचार पत्र तैयारी में लगे रहने वाले साथी, प्रिन्ट के अलावा नये संसाधनों (ई-पेपर) के रूप में भी इसको स्वरूप दे रहे साथियों सभी का आभार प्रकट करते हैं कि वह इसे मिशन भाव से आगे बढ़ाने में जुटे हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

कोश्यारी को मिले पद्म सम्मान ने दूरस्थ-दुर्गम क्षेत्र का मान बढ़ाया है

प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और महाराष्ट्र के पूर्व राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी को देश का पद्मभूषण सम्मान मिलना वाकेई दूरस्थ-दुर्गम क्षेत्र का मान है। श्री कोश्यारी की राजनीतिक पारी अपनी जगह है लेकिन जिन परिस्थितियों से निकल कर वह आगे बढ़े हैं वह उनकी प्रतिभा को उजागर करती है। सामन्य परिवार में जन्मे भगतदा शिक्षक और पत्रकार की भूमिका में उतरे तो वह समाज में रमे रहे। खेमिला, नामती चेटाबगड़, कपकोट (बागेश्वर) के गोपाल सिंह-मोतिमा देवी के घर 17 जून 1942 को जन्मे भगतसिंह ने शिक्षा को हथियार बनाया और अपनी लगन से जुटे रहे। प्रारम्भिक शिक्षा महरगाड़ी से प्राप्त करने के बाद शामा से हाईस्कूल और कपकोट से इण्टर किया। 1961 में अल्मोड़ा कालेज छात्र संघ के महासचिव बनने के साथ ही वह राजनीति में प्रवेश कर गये। 1975 में तत्कलीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी द्वारा लगाए गए आपात काल के विरोध में उन्हें करीब पौने दो साल तक जेल में रहना पड़ा। इसके बाद तो राजनीति के क्षेत्र में वह आगे ही बढ़ते चले गये। कुमाऊँ विश्वविद्यालय के एग्जीक्यूटिव काउंसिल में प्रतिनिधित्व के अलावा 1997 में यूपी विधान परिषद के सदस्य चुने गये। वर्ष 2000 में उत्तराखण्ड को पृथक प्रदेश बनने के बाद उन्हें प्रदेश सरकार में कैबिनेट मंत्री की जिम्मेदारी मिली। पहले विधानसभा चुनाव से करीब छह महीने पहले वह प्रदेश के मुख्यमंत्री बने।

इन तमाम बातों के अलावा यदि देखा जाए तो आम पहाड़ी जीवन भगत दा का रहा है। हमेशा धोती-कुर्ता उनका लिवास रहा और पसन्दीदा भोजन खिचड़ी। सीधे-सरल लोगों को पहचाने के अलावा जिस तरह भाग्य ने उनका साथ दिया वह दिग्गजों के लिये भी 'बाबू जी' के रूप में ख्याति पा गये। ऐसे सरल व्यक्तित्व को देश का बड़ा सम्मान मिलना गौरव की बात है। उनके जानने वालों, उनके क्षेत्र के लिये भी अमूल्य है।

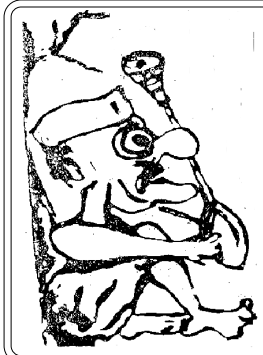

फसक

दाज्यू, अब अपटूडेट दिखने का जमाना ठैरा

मल अटका हो कोई बात नहीं, क्रीम-पाउडर-सेंट जरूरी है बल

दाज्यू, गरमी का मौसम तो है ही लेकिन इस बार के घाम ने पूरी तरह च्वेड़ दिया है। ऊपर से डीजल-पेट्रोल के दाम आसमान चढ़ते जा रहे हैं। दाज्यू, हमें चिन्ता सता रही है कि मौसम की आग में कहीं कोई बीमार न हो जाए और जंगल के जीव-जन्तुओं को नुकसान न हो जाए। लेकिन मोहल्ले का मुनरवा गजल गा रहा है और सड़क किनारे ही पेशाब करने लगता है। मना करने पर उसका कहना है- 'कुछ करो या न करो, फेसबुक पर फोटो चेपते रहो। बड़े-बड़े लोगों के साथ फोटोबाजी करते रहो। दुनिया में जितना दिखोगे उतना खुशहाली होगी।' दाज्यू, हमारी कुछ समझ नहीं आ रहा है कि मुनरवा क्या कहना चाहता है। उसे देख इतना ही लग रहा है कि अब अपटूडेट दिखने का जमाना ठैरा। बाजार का कचार खाते रहो बस। मल चाहे अटका हो कोई बात नहीं, क्रीम-पाउडर-सैंट जरूरी है बल। झुपझुपी बनाकर रील बनाओ, यन्त्र को श्रीयन्त्र कहो, चाहे जो मौका हो अपने गीत-गजल गाते रहो और बताओ ऐतिहासिक काम हो रहा है।

दाज्यू, अब लालबहादुर का जमाना तो है नहीं। सब अपटूडेट चह रहा है, किसी का पिछलग्गू हो लो और धो पोछकर माहौल तैयार। अब देख लो, चारधाम यात्रा पर आने वाले वीआईपी के खर्चों की जाँच होगी बल। अधिवक्ता विकेश नेगी जब यह मामला उठाया तो मन्दिर समिति ने विरोध किया था। आरटीआई में फर्रे बाहर आने के बाद अब जाँच-पड़ताल हो जाएगी। और होना भी क्या है? दाज्यू, आस्था के नाम पर चढ़ावे का धुर्रा उड़ रहा हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। आस्था के पुजारी भी तो नहीं रहे, अब तो मौज मस्ती करते हुए लौ-लौ-पौ-पौ करने वलो यात्राओं पर निकल रहे हैं। आदि कैलास में भी फोटो-फिलम शूटिंग का ही जोर चल रहा है। दाज्यू, शिव को समझने के लिये तो शान्त होना पड़ेगा। घोर कलजुग चल रहा है, सब फरड़ी रहे हैं, आग बरस रही है, कौन चुप रहने वाला है? पाउडर छड़को, टाटपट्टी पहनो और फरफराट यात्रा। छोटे बच्चे भी हैं तो उन्हें भी हगीच लगाकर घुमा लाओ। यह सब देखकर भगवान भी सोचता होगा हो जाने दो दुनिया का भगन्दर। गंगोलीहाट के चहज के रहने वाले को बाल पोर्नोग्राफी शेयर करने पर पुलिस ने पकड़ा। दाज्यू, दिनभर खाली बैठे लोग भी लित्तमार महसूस करते हैं, न रोजगार न स्वरोजगार। यही सब अंट संट को प्रसाद मान बैठे हैं।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

भारत-तिब्बत-चीन सीमा पर स्थानीय लोगों, आईटीबीपी, आर्मी, बीआरओ द्वारा सड़क का सराहनीय कार्य

मल्ला जोहार में पैदल सड़क की दिशा सुधारने के लिये सीएम को पत्र

मुनस्यारी। मल्ला जोहार विकास समिति ने भारत-तिब्बत-चीन सीमा पर स्थानीय लोगों, आईटीबीपी, आर्मी, बीआरओ द्वारा किये जा रहे सड़क निर्माण की सराहना करते हुए कहा है कि इससे आवागमन में सभी को सुविधा होगी। इससे स्थानीय लोगों को आवागमन के अलावा सीमा की रक्षा करने वाले जवानों को सीमा चौकियों में पहुँचने में सुगमता होगी। साथ ही आफिसर कमाण्डेंट बीआरओ दरकोट को पत्र सौंपकर धापा-मिलम मोटर सड़क के किनारे एवं भूस्खलन वाली जगहों पर वृक्षारोपण के लिये कहा है। कहा है, मोटर सड़क निर्माण के साथ-साथ भौगोलिक स्थितियों और पर्यावरण को देखते हुए वृक्षारोपण का कार्य भी इस स्तर पर होना चाहिये। इसमें क्षेत्रवासियों का पूरा सहयोग मिलेगा।

इसके अलावा मल्ला जोहार विकास समिति ने मुख्यमंत्री को पत्र भेजते हुए मल्ला जोहार में पैदल सड़क की दिशा सुधरवाने की मांग की है। समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने कहा है कि माइग्रेशन परिवार वाले कितनी कठिनाईयो में दिनबसर कर रहे हैं उसे जानना जरूरी है। इन दूरस्थ ग्रामों की सुधबुध लेने के लिये अधिकारियों को आकर जानकारी जुटानी चाहिये। साथ ही श्री धर्मशक्तू ने जिलाधिकारी को सम्बोधित करते हुए कहा है कि ग्रीष्म सीजन में काफी संख्या में पर्यटक मिलम ग्राम देखने अपनी गाड़ियों से आ रहे हैं परन्तु किसी आने वाली गाड़ियों की किसी प्रकार की चैकिंग नहीं हो रही है। जबकि आने वाले वाहनों की चैकिंग आवश्यक रूप से होनी चाहिये। बोगड्यार आईटीबीपी कैम्प के नजदीक पुलिस चैक पोस्ट स्थापित कर जाँच होनी चाहिये ताकि किसी भी तरह के असामाजिक तत्व सीमान्त में न पहुँच सकें।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सोच-विचार

विद्यार्थियों को प्रयोगशाला का जीव न समझा जाए

हिमांशु उपाध्याय

समाज में चल रही पुरानी परम्परा को बदलने के लिए साहस की आवश्यकता है यह सभी जानते हैं लेकिन परिवर्तन हमेशा स्वीकार्य होगा यह कहना उचित नहीं है। परिवर्तन के लिए कई वर्षों के निरन्तर प्रयास जरूरी होते हैं। एक लम्बी सफल तैयारी के बाद परिवर्तन कर दिया जाता है। इस परिवर्तन के लाभ को समाज धीरे-धीरे स्वीकार कर आगे बढ़ जाता है।

दूसरी तरफ यदि परिवर्तन जल्दबाजी और बिना सफल तैयारी के कर दिया जाय तो उसका नुकसान समाज को उठाना पडता है। वर्तमान समय में सीबीएसई ने ऐसा ही कदम उठाया है जिसकी आलोचना हो रही है। कक्षा 12वीं में ओएसएम और कक्षा नवीं में तीन भाषाओं को पाठ्यक्रम में शामिल करना। ना ओएसएम को लागू करने की उचित तैयारी थी और नही अब वर्षो के पाठ्यक्रम में तीसरी भाषा को शामिल करने से पहले तीसरी भाषा पढ़ाने वाले शिक्षकों की नियुक्ति तथा तीसरी भाषा की किताबों की उपलब्धता। बिना उचित तैयारी के शिक्षा में परिवर्तन करना ऐसा ही है जैसे वैज्ञानिक किसी दवा का परीक्षण चूहों या अन्य निरीह प्राणियों पर करते हैं। सीबीएसई ने भी ऐसा ही परीक्षण विद्यार्थियों पर किया है। हो सकता है आने वाले वर्षों में यह प्रयोग सफल हो लेकिन जिन विद्यार्थियों पर यह प्रयोग हुआ है उनका भविष्य का क्या होगा? क्या इस बैच के बच्चों की सीबीएसई कोई मदद करेगी या विद्यार्थी पिगी टेस्ट का शिकार हो जायेंगे। यह बहुत गम्भीर विषय है जिस पर केन्द्र सरकार को अपना स्पष्ट रुख बताना चाहिए। इस विषय पर समाज के बुद्धिजीवियों को भी अपने विचारों से समाज को अवगत कराना चाहिए।

विद्यार्थियों का हृदय बहुत कोमल होता है। अचानक हुए परिवर्तन को सहन करने में सक्षम नहीं होते इसके लिए अनुभव की आवश्यकता होती है इसलिए अनुमान का विचार विद्यार्थियों से नहीं किया जा सकता। सरकार द्वारा जो भी परिवर्तन किये जाते हैं उसकी दीर्घकालीन तैयारी होनी चाहिए ताकि परिवर्तन हेतु विद्यार्थी मानसिक रूप से तैयार हो सकें।

विभाग द्वारा शिक्षकों को इस परिवर्तन के लिए कम से कम एक या दो वर्ष तक प्रशिक्षण देना चाहिए। टेक्नोलॉजी में आ रहे परिवर्तन और नई तकनीकी व्यवस्था को लागू कर देना कुछ शिक्षकों के लिए खुद को नई व्यवस्था के अनुरूप ढाल लेना बहुत कठिन होता है। जो शिक्षक वर्तमान में 55-60 वर्ष की आयु के हैं उनसे तकनीकी दक्षता की उम्मीद करना कितना न्याय संगत है। जबकि इस आयु के शिक्षक परम्परागत शिक्षण व्यवस्था में अपना सर्वोच्च योगदान देने के लिए जाने जाते है लेकिन अचानक हुए परिवर्तन से अनुभवी शिक्षक भी असहज हो जाते हैं ऐसे में विद्यार्थियों की स्थिति का आकलन जरूरी है। (सह राप्रावि आमहाट)

गम्भीर सवाल

लोक भाषाओं के उन्नयन हेतु सम्मिलित प्रयास जरूरी

रतनसिंह किरमोलिया

यह सर्वविदित है कि हमारा उत्तराखंड दो मण्डलों में विभाजित है। कुमाऊं और गढ़वाल। कुमाऊं में बोली जाने वाली लोक भाषा कुमाउनी कहलाती है और गढ़वाल में बोली जाने वाली लोक भाषा गढ़वाली कही जाती है। इन दोनों लोक भाषाओं की भी अपनी कई उपबोलियां प्रचलन में हैं। इन लोक भाषाओं का इतिहास बहुत पुराना है। करीब नौवीं शताब्दी के शिलालेख इस बात की तसदीक करते हैं। यह भी जानकारी मिलती है कि ये लोक भाषाएं तत्कालीन राजाओं की राज भाषा भी रहीं। हमारी लोक भाषाएं इतनी पुरानी होने के बावजूद इनका न आज तक मानकीकरण हो सका। न एक सशक्त इस्कूली पाठ्यक्रम ही बन पाया और न संविधान की आठवीं अनुसूची में ही शामिल करवाने के सार्थक प्रयास हो पाए। जबकि हमारी इन लोक भाषाओं की हर विधा में प्रचुर साहित्य उपलब्ध है और निरन्तर उत्कृष्ट साहित्य सृजन हो रहा है। बावजूद इसके एक ठोस एवं सशक्त पहल न होने से हमारी लोक भाषाओं को राष्ट्रीय स्तर पर वो सम्मान नहीं मिल पा रहा है जिसकी ये भाषाएं हकदार हैं।

उत्तराखण्ड एवं उत्तराखण्ड से बाहर रह रहे रचनाकार निरन्तर सृजनरत हैं। हर विधा में पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं। साप्ताहिक एवं मासिक पत्र-पत्रिकाएं छप रही हैं। डिजिटल मीडिया के माध्यम से भी पर्याप्त प्रयास हो रहे हैं। जिससे हमारी लोक भाषाओं का फलक राष्ट्रीय ही नहीं अपितु अन्तरराष्ट्रीय मंच तक विस्तार पा रहा है। ये सारे प्रयास स्तुत्य हैं परन्तु ये सब व्यक्तिगत स्तर पर होने वाले प्रयास हैं। यहाँ तक कि इस प्रदेश एवं बाहर हर बर्ष लोक भाषाओं के राष्ट्रीय भाषा सम्मेलन भी आयोजित किए जा रहे हैं।

सरकारी स्तर पर उत्तराखण्ड सरकार ने 'उत्तराखण्ड भाषा संस्थान' का गठन कर प्रसंशनीय कार्य किया है। भाषा संस्थान लोक भाषाओं के रचनाकारों को हर वर्ष पुस्तक प्रकाशन हेतु अनुदान भी दे रहा है और रचनाकारों को 'उत्तराखंड साहित्य गौरव सम्मान' जैसे सम्मान देकर सम्मानित भी कर रहा है किन्तु हमारी लोक भाषाओं के उन्नयन एवं समृद्ध विकास के लिए इससे आगे न उत्तराखण्ड भाषा संस्थान सोच पा रहा है और न हमारे प्रतिनिधि लेखक/ साहित्यकार? इससे उलट यह देखने में आ रहा है कि पुस्तकीय अनुदान एवं साहित्य गौरव सम्मान प्राप्त करना साहित्य सृजन से अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं? पुस्तकीय अनुदान भी पन्द्रह लाख सालाना तक आय वाले रचनाकारों को दिया जा रहा है। साहित्य गौरव सम्मान भी साल दर साल विवादों के घेरे में आ रहे हैं। शिकायत के बावजूद सुधार न होना भी सन्देहास्पद है।

विवादों से बचने के लिए उत्तराखण्ड भाषा संस्थान को अपने सिस्टम में बदलाव की जरूरत है। पुरस्कारों के लिए आवेदन मांगे जाने के स्थान पर सभी रचनाकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को प्रदर्शित करने वाली साहित्यकार गैलरी स्थापित करने की जरूरत है। पुरस्कारों के लिए चयन वहीं से किया जाए। चयन समिति में ऐसे लोक भाषाओं के वरिष्ठ प्रबुद्ध जानकार विद्वानों को शामिल किया जाए जो निष्पक्ष एवं ईमानदार हों। स्वयं भाषा संस्थान में लोक भाषाओं के अध्येता जानकार विद्वान अधिकारी कर्मचारी नियुक्त किए जाएं। रचनाकारों को पुस्तकीय अनुदान देने के बजाए संस्थान खुद प्रकाशन का दायित्व ले। प्रकाशित साहित्य एवं पत्र-पत्रिकाओं को देश प्रदेशों के पुस्तकालयों/वाचनालयों में बिक्री हेतु भेजा जाए। यह इसलिए कि हमारे लोक भाषा भाषी करीब करीब सभी राज्यों में कार्यरत हैं या निवास करते हैं। इससे प्रचार प्रसार में मदद मिलेगी। इससे प्राप्त होने वाली आय से एक कोष बनाया जाए। इस आय के कुछ अंश से रचनाकारों को रॉयल्टी दी जा सकती है। इस्कूल कालेजों में छात्रों के बीच समय-समय पर विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएं। इससे नई पीढ़ी अपनी भाषा संस्कृति से जुड़ पाएगी। विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में लोक भाषाओं से सम्बन्धित प्रश्न निर्धारित किए जाएं। यहाँ नियुक्ति पाने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए यहाँ की लोक भाषाओं का जानकारी अनिवार्य की जाए। लोक भाषाओं के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए जगह-जगह लोक भाषाओं में लिखे बोर्ड लगाए जाएं। इस्कूली पाठ्यक्रम निर्माण एवं संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करवाने के लिए भाषा का मानक रूप तय होना अनिवार्य है। इसलिए इस पर सम्यक कार्यवाही आवश्यक है। यह कार्य बिना सरकारी सहयोग के नहीं हो सकता है। सरकारें इसके लिए विशेष संजीदा नजर नहीं आ रही हैं। इसके लिए हमारे विद्वानों को ही सम्मिलित प्रयास करने होंगे। सरकार के संज्ञान में इस बात को लाने के लिए दबाव बनाना आवश्यक है। इस काम के लिए ईमानदार जुझारू एवं निष्पक्ष विद्वानों का एक शिष्टमण्डल बनाया जाना नितान्त आवश्यक है। जो मुख्यमंत्री जी से बातचीत कर सके। इस बातचीत में भाषा संस्थान के निदेशक एवं भाषा मंत्री जी को भी शामिल करवाने का अनुरोध किया जाए।

उम्मीद की जा सकती है कि लोक भाषा उन्नयन के लिये मुख्यमंत्री जी शिष्टमण्डल की बात पर अवश्य सहमत हो जाएंगे ।

ज्योतिष की बातें

8 जून 2026 को शुक्र मित्रराशि से निकलकर शत्रुराशि कर्क में प्रवेश करेगा। जहाँ पर शुभग्रह गुरु से युति भी होगी। इस समय कुल मिलाकर शुक्र निर्बल ही रहेगा। शुक्र भौतिक सुख, सांसारिक लाभ, सफलता, धन सम्पत्ति, वाहन, वैवाहिक जीवन, प्रेम प्रकरण आदि का कारक होता है। फलदीपिका के अनुसार शुक्र का गोचर चन्द्रमा से छठवें, सातवें और दसवें स्थान पर अशुभ होता है अन्य स्थानों पर शुभ होता है। साथ ही मकर और कुम्भ राशियों के लिए शुक्र योगकारक भी होता है। अतः अगले 24 दिन शुक्र अपने कारक विषयों में सभी राशियों को प्रायः अल्पमात्रा में ही शुभफल प्रदान करेगा।

यहाँ पर किसी भी ग्रह का सामान्य गोचरफल प्रस्तुत किया जाता है। व्यक्तिविशेष के लिए उसका सूक्ष्म फलित जन्म कुण्डली, दशान्तर्दशा आदि पर निर्भर करता है।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार

नकारात्मक वाक्यों का प्रयोग

आजकल समाज में नकारात्मक वाक्यों का अत्यधिक प्रयोग हो रहा है, जैसे- यहाँ मत बैठो, यहाँ मत खड़े हो, यहाँ गाड़ी पार्क मत करो, यहाँ कूड़ा फेंकना मना है, यहाँ थूकना मना है, यहाँ पेशाब मत करो, अनावश्यक बैठना मना है, बिना अनुमति अन्दर आना माना है, ऐसा मत करो, वैसा मत करो, यह मत खाओ, वह मत खाओ आदि आदि। ऐसा नहीं होना चाहिए।

जब कोई कहता है कि यहाँ खड़े मत हो तो उसे यह भी बताना चाहिए कि कहाँ पर खड़े हो। जब कोई कहता है कि यहाँ पर गाड़ी पार्क मत करो तो उसे यह भी बताना चाहिए कि पार्किंग कहाँ पर है। जब कोई कहता है कि यहाँ पर कूड़ा मत फेंको तो उसे यह भी बताना चाहिए कि कूड़ा कहाँ पर फेंकना है। जब कोई कहता है कि यहाँ पेशाब मत करो तब उसे यह भी बताना चाहिए कि कहाँ पर पेशाबघर है।

एक समय था जब दरवाजे पर लोग 'स्वागतम्' लिखते थे, आजकल लिखते हैं कि बिना अनुमति अन्दर आना माना है। आजकल लिख देते हैं कि यहाँ पर बैठना मना है, पहले लिखते थे यहाँ पर छाया में विश्राम करके आगे बढ़ें। वास्तव में नकारात्मक वाक्य पशुता के प्रतीक हैं और सकारात्मक वाक्य मानवता के।

-ओंकार नाथ कोष्टा

आपके पत्र

केन्द्र कर्मचारियों एवं पेंशनरों को यह कैसा तोहफा

आजकल कुछ समय से मोबाइल के माध्यम से समाचार सुनने को मिल रहा है जबकि यह समाचार न तो किसी न्यूज चैनल में तथा समाचार पत्रों में प्रसारित होते नहीं दिखाई दे रहा है कि केन्द्र सरकार आठवां वेतन आयोग की सिफारिश से घोषित करने के बहाने कर्मचारियों एवं पेंशनर्स को अच्छाखासा बेवकूफ बना रही है। कहा जा रहा है कि केन्द्रीय कर्मचारियों को अच्छीखासी सैलरी और पेंशनर्स को अच्छी पेंशन बढ़ाई गई है तथा उनको 18 माह का एरियर तथा 123 किस्तों में भुगतान किया जाएगा। यह कैसा निर्णय दिया गया है कर्मचारियों की सैलरी तथा पेंशनर्स के पेंशन किस दर से तथा किस फार्मूले से दी जाएगी इसका स्पष्ट उल्लेख नहीं है। साथ ही कब से प्रभावित होगा तथा इसके अलावा 18 माह का एरियर तथा 123 किस्त किस आधार पर दी जाएगी, किस माह से व किस तिथि से उक्त 18 माह की सैलरी दी जाएगी तथा कब तक कर्मचारी एवं पेंशनर्स चुपचाप बैठकर प्रतीक्षा करते रहेंगे। तब तक सरकारी कर्मचारी सरकारी सेवा से रिटायर हो जाएंगे तथा कई बुजुर्ग पेंशनर्स दिवंगत हो चुके होंगे, तब यह लाभ किसको मिलेगा। इसे अधिकतम तीन या चार माह तक एरियर में भुगतान किया जाना चाहिए। यह गम्भीर एवं सोचने की बात है कि यह बेतुका निर्णय लेने से पहले सरकार गम्भीरता से विचार करे तथा सही निर्णय लेकर समाचार सार्वजनिक किया जाए। इसे टीवी चैनल, न्यूज चैनल एवं समाचार पत्रों में प्रकाशित किया जाए। केन्द्रीय कर्मचारी व पेंशनर्स इससे दिग्भ्रमित स्थिति में हैं कि जनता को बेवकूफ बनाने का यह तरीका किस आधार पर उचित है। अभी तक केन्द्र सरकार के कर्मचारियों का मामला बनता है लेकिन बाद में यह राज्य सरकार की परिधि में भी आ सकता है। घोषणा करके दानी भी कहलाते हैं और कानून भी दिखाते हैं।

-एक पेंशनर्स
नन्दा बल्लभ पाण्डे
संरक्षक गवर्नर पेंशनर्स वेलफेयर संगठन
ज्योलीकोट(नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

देवसिंह मैदान में सौन्दर्यीरण कार्य

पिथौरागढ़। देव सिंह मैदान को मिनी स्टेडियम के रूप में उच्चीकृत किये जाने के साथ ही इसका सौन्दर्यीकरण कार्य जोरों पर है। मेयर कल्पना देवलाल और नगर आयुक्त डॉ. दीपक सैनी ने मैदान में किये जा रहे विस्तारीकरण एवं सौन्दर्यीकरण कार्य का निरीक्षण करते हुए समय पर गुणवत्तायुक्त कार्य के निर्देश दिये।

बोट हाउस क्लब पार्क में न हो निर्माण

नैनीताल। आयुक्त दीपक रावत ने बोट हाउस क्लब के समीप बन रहे पार्क का स्थलीय निरीक्षण के दौरान सख्त निर्देश दिये कि भारी निर्माण न किया जाए। कहा प्राकृतिक सुन्दरता और हरियाली के लिये प्रसिद्ध नैनीताल के सार्वजनिक पार्कों को कंक्रीट संरचनाओं से भर देना उचित नहीं है।

गोल्फ टूर्नामेंट में समर्थ जैन चैंपियन

नैनीताल। तीन दिवसीय 21वां गवर्नर्स कप गोल्फ टूर्नामेंट 2026 में समर्थ जैन ओवरऑल चैम्पियन बने। लोक भवन गोल्फ क्लब की ओर से आयोजित इस प्रतियोगिता में देश के 9 राज्यों से 179 गोल्फरों ने प्रतिभाग किया। समापन पर राज्यपाल ले.जन. गुरमीत सिंह ने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

गंगोलीहाट की पेयजल योजनाएं?

गंगोलीहाट। क्षेत्र की चार प्रमुख पेयजल योजनाएं अधर में लटकी हैं, इससे पता चलता है कि विकास कार्य कितनी गति से हो रहे हैं। सामाजिक कार्यकर्ता डी. एस. सुगड़ा ने सूचना अधिकार में इस बावत जानकारी चाही तो चौंकाने वाली बात पता चली। विभाग ने पूर्व में इन योजनाओं को 2025 तक चालू करने का दावा किया था लेकिन सच्चाई कुछ और ही है। जांच की मांग की गई है।

रानीखेत में बसों के लिये वन-वे व्यवस्था

रानीखेत। नगर में लगातार बढ़ रहे पर्यटक दबाव और जाम की समस्या को देखते हुए क्षेत्रवासियों द्वारा लम्बे समय से रोडवेज बसों के लिए वन-वे व्यवस्था लागू करने की मांग की जा रही थी। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक चन्द्रशेखर घोडके के निर्देश में यातायात संचालन को नगर में पहली बार रोजवेज बसों के संचालन हेतु वन-वे ट्रेफिक व्यवस्था लागू की गई है।

फूलों की घाटी महकी

चमोली। विश्व धरोहर फूलों की घाटी को जोड़ने वाले पैदल मार्ग को नन्दादेवी राष्ट्रीय पार्क को जैसे ही प्रशासन शुरू किया, वह पर्यटकों से भी महक उठा। इस बार घाटी की सैर के दौरान पर्यटक लेगी नाले में हिमखण्ड के भी दीदार कर रहे हैं। प्रतिवर्ष 1 जून से 31 अक्टूबर तक पर्यटकों के लिये फूलों की घाटी खुली रहती है।

परिक्रमा

फचैऽक

गणेश पाण्डेय

नेतान्क रोड शो में चलनी, रोजाना सौ पचास मोटर कार हमरि लिजी फरमान हैगो यस, तेलकि बचत करो तुम यार तेलकि बचत करो तुम यार, पैदल हिटण सिखो मांटूं मूंठ जेवर आब के बणून न्हातन, बर-ब्योलि पाड़ो आंचवक गूंठ काम काजन में तनार ठाठ बाट, माफ छु तनन जे लै करनी तेलकि बर्बादी करनी उं गाड़ि, नेतान्क रोड शो में चलनी।

नन्दादेवी राजजात में अल्मोड़ा की नन्दा डोली भी शामिल होगी

कर्णप्रयाग/अल्मोड़ा। अगले वर्ष आयोजित होने वाली हिमालयी महाकुम्भ नन्दा देवी राजजात में अल्मोड़ा की नन्दादेवी की देवी डोली (राजछत्र) कुमाऊँ के चंदवंशी राजा, युवराज एवं हजारों नन्दा भक्तों के साथ परम्परागत रूप से शामिल होंगे। अल्मोड़ा जिले की नन्दा देवी के साथ ही कुमाऊँ मण्डल के प्रत्येक जनपद से कई देव डोलियां भी यात्रा में शामिल होंगी।

नन्दा देवी राजजात समिति के महामंत्री भुवन नौटियाल ने बताया कि यात्रा की तैयारियां शासन स्तर पर प्रारम्भ कर दी गई हैं। अब अल्मोड़ा में आयोजन समिति नन्दा देवी राजजात समिति के साथ विस्तृत बैठक करेगी। इसमें राजपरिवार मन्दिर समिति तथा कुमाऊँ मण्डल के सभी जनपदों के प्रतिनिधि, जहाँ से देव डोलियां नन्दा देवी राजजात में शामिल होती हैं, वहाँ के मंत्रीगण, सांसदों, विधायकों एवं जन प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया जाएगा।

नन्दादेवी मन्दिर समित अल्मोड़ा के अध्यक्ष मनोज वर्मा और सचिव मनोज सनवाल ने नन्दा देवी राजजात समिति के इस निर्णय का स्वागत करते हुए बताया कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने राजजात के लिए आर्थिक प्रस्ताव प्रस्तुत किया है। जिससे आगामी राजजात आयोजन में मदद मिलेगी।

कैलास मानसरोवर यात्रा : यात्री 10 जुलाई को करेंगे चीन में प्रवेश

पिथौरागढ़/नैनीताल। कैलास मानसरोवर यात्रा की तैयारियां पूर्ण हैं और चार जुलाई से दिल्ली से शुरू होने वाली यात्रा के पहले दल का चीन में प्रवेश दस जुलाई को होगा।

कैलास मानसरोवर यात्रा के लिये विदेश मंत्रालय दिल्ली में विदेश मंत्री एम जयशंकर की उपस्थिति में ड्रा के माध्यम से यात्रियों का चयन किया गया। कुल 1980 यात्रियों में से 480 यात्री यात्रा के लिए चयनित किये गये। 1500 यात्रियों को प्रतीक्षा सूची में रखा गया है। यात्रियों का पहल दल 4 जुलाई को दिल्ली से रवाना होगा।

बताया गया है कि सभी चयनित यात्री 30 जून को दिल्ली में एकत्रित होंगे। यात्रा के दस ग्रुप बनाए गये हैं। चार जुलाई को दिल्ली से पहला दल यात्रा के लिये रवाना होकर टनकपुर पहुंचेगा। 5 जुलाई को यात्री धारचूला पहुंच जाएंगे। हगले दिन यात्री गुंजी रवाना होंगे। 7 जुलाई को गुंजी में विश्राम के बाद अगले दिन नाभीढांग पहुंचेंगे। दस जुलाई को नाभीढांग पास होते हुए चीन के पुरांग में प्रवेश होगा। 12 जुलाई को पुरांग से मानास राक्षस ताल होते हुए तरकिन पहुंचेंगे। 13 जुलाई को जेरापू में यमद्वार होते हुए कैलास की परिक्रमा करेंगे। 15 जुलाई को परिक्रमा पूरी कर यात्री झूंझईपू, चुगु में परिक्रमा करेंगे। अगले दिन चुगु मानस की परिक्रमा फिर 18 जुलाई को यात्री लिपुपास होते हुए वापस बूदी आएंगे। यहाँ से चौकोड़ी होते हुए 21 जुलाई को अल्मोड़ा से यात्री दिल्ली पहुंचेंगे। यात्रा देखते हुए कुमाऊँ मण्डल मण्डल विकास निगम अपने पड़ावों पर तैयारी कर रहा है।

शारदा कॉरिडोर कार्य में गति, किरौड़ा नाले से बचाएगी सुरक्षा दीवार

टनकपुर। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के ड्रीम प्रोजेक्ट शारदा कॉरिडोर का निर्माण गति पकड़ चुका है। प्रथम चरण में शामिल किरौड़ा नाले में घाट की ओर से सुरक्षा दीवार का 22 प्रतिशत कार्य पूर्ण हो गया है। मानसून के बाद भव्य शारदा घाट और ड्रेनेज व सीवर लाइन का निर्माण कार्य शुरू करने की तैयारी है। बताया गया है कि दो वर्ष में प्रथम चरण का कार्य पूरा हो जाएगा।

सीएम धामी ने फरवरी माह में करीब 3400 करोड़ से अधिक की शारदा कॉरिडोर योजना के प्रथम चरण के कार्य का शारदा घाट कॉरिडोर योजना के प्रथम चरण के कार्य का शारदा घाट पर शिलान्यास किया था। योजना के प्रथम चरण में भव्य घाट के सौन्दर्यीकरण, करीब 500 मीटर लम्बा घाट, फ्लड रोकने के लिये सुरक्षा दीवार, गेट, पैदल मार्ग, चेजिंग रूम, यात्री विश्रमा शेड, लाइटिंग आदि कार्य शामिल हैं।

कर्णप्रयाग में रामलीला की धूम मची हुई है

ललित नैनवाल

कर्णप्रयाग। जय श्रीराम रामलीला कमेटी अपर बाजर द्वारा आयोजित रामलीला की धूम मची हुई है। पर्वतीय शैली में परम्परागत तरीके से शुरू लीला में जब ताड़िका एवम सुबाहु मारीच वध की लीला का मंचन किया गया, दशरथ की भूमिका में राजेश जोशी(राजा) राम शिवाशु मालगुड़ी लक्ष्मण दिव्यांशु रावत सीता कुमारी प्रियंका नेगी, विश्वामित्र अनिल खंडूरी, ताड़ीका चन्द्रशेखर जुयाल, सुबाहु गौरव रावत मारीच सौरभ चंदा, अहिल्या वंशिका मालगुड़ी, गौरी के पात्र कु.आँचल चौहान सुमन्त हर्षित डिमरी की शानदार भूमिका ने खूब ताली बटोरी। अहिल्या तारण के बाद जनकपुरी पहुंचे गौरी पूजन हेतु आई सीता की पात्र प्रियंका नेगी ने बेहतर मंचन किया। इससे पूर्व दीप प्रज्ज्वलन गढ़वाल मण्डल विकास निगम के पूर्व निर्देशक टीका प्रसाद मैखुरी एवं व्यापार संघ लगासू के महामंत्री यशवंत असवाल एवं कमेटी के सदस्यों ने किया।

श्री मैखुरी ने कहा प्रभु राम के पद चिन्हों पर चलने वाले हर व्यक्ति के दुखों का अन्त होगा क्योंकि प्रभु राम की लीला का प्रतिवर्ष मंचन हमें सत्य के मार्ग मे चलने का सन्देश मिलता है। लीला मे शिव शक्ति कीर्तन मण्डली तहसील जानकी रावत, उषा बिष्ट, कमेटी के अध्यक्ष हरिकृष्ण भट्ट, कोषाध्यक्ष नवीन डिमरी सम्पूर्णानन्द डिमरी सुभाष गेरोला सौरभ काण्डपाल आदित्य नवनी रहीम सिद्दकी सुखदेव चौहान सुरेन्द्र रावत हरीश पुरोहित हारमोनियम वादक मनोज हटवाल तबला वादक पंकज हारमोनियम पैड मे मनोज पाण्डु हैं। कमेटी द्वारा राम भक्तों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

सेना के बनाए रं हेजिटेज का शुभारम्भ

धारचूला। सेना के बनाए रं हेरिटेज का उद्घाटन लेफ्टिनेंट जनरल अनिंद्य सेनगुप्ता, जनरल ऑफिसर कमॉण्डिंग इन चीफ, सेन्ट्रल कमाण्ड ने किया। इन केन्द्र की स्थापना सूर्या कमान के अन्तर्गत पंचशूल ब्रिगेड ने स्थानीय समुदायों के साथ जुड़ाव और सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की है।

आदि कैलास के लिये उत्साह

धारचूला। मैदानी क्षेत्र में भीषण गर्मी के दिनों में सैलानियों का पहाड़ को आना हो रहा है, उसमें भी आदि कैलास के लिये विशेष उत्साह है। अभी तक करीब 25 हजार इनर लाइन पास बन चुके हैं। बड़ी सख्या में यात्रियों के आने से होटल, होमस्टे, वाहन संचालकों में खुशी है।

चिह्नीकरण की मांग के लिये रैली

धारचूला। वंचित राज्य आन्दोलनकारियों के चिह्नीकरण समेत दस सूत्रीय मांगों को लेकर यूकेडी ने रैली निकालते हुए विरोध प्रदर्शन किया। जिलाध्यक्ष चंचल सिंह ऐरी के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन करते हुए कहा कि आन्दोलन के दौरान वर्ष 1994 में 146 और 1996 में 100 से अधिक आन्दोलनकारी धारचूला में गिरफ्तार हुए थे।

श्रीमती दया पाण्डे का निधन

अल्मोड़ा। पिघलता हिमालय की सम्पादक रही स्व. कमला उप्रेती की दीदी अल्मोड़ा थाना मोहल्ला निवासी श्रीमती दया पाण्डे का संक्षिप्त बीमारी में निधन हो गया। हमेशा धार्मिक व सामाजिक कार्यों में रत श्रीमती पाण्डे अपने पीछे सुपुत्र मोहित पाण्डे, विवाहित सुपुत्री श्रीमती रेनू जोशी सहित भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। पिघलता हिमालय परिवार स्व. श्रीमती दया पाण्डे को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

श्रीमती प्रेमा मर्तोलिया का निधन

हल्द्वानी। श्रीमती प्रेमा मर्तोलिया पत्नी भीम सिंह मर्तोलिया का विगत दिवस निधन हो गया। एडीएम चन्द्र सिंह मर्तोलिया की माता श्रीमती प्रेमा जी सामाजिक कार्यों में अग्रणीय रही हैं। पिघलता हिमालय परिवार स्व. प्रेमा मर्तोलिया को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

मनोज पाण्डे का निधन

थल। युवा व्यापारी एवं रामलीला कमेटी के महामंत्री मनोज गोस्वामी का स्वास्थ्य खराब होने से असमय निधन हो गया। 45 वर्षीय मनोज अपने पीछे माता, पत्नी और दो पुत्रियों को बिलखता छोड़ गए हैं। पिघलता हिमालय परिवार स्व. मनोज को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

1979 में जब 'पिघलता हिमालय' दैनिक का शुभारम्भ किया गया तो इसके मुख्य अतिथि मूर्धन्य नाटककार पं. गोविन्द बल्लभ पन्त थे। चित्र में एक पत्र वाचते हुए पन्त जी। बाएं से पिघलता हिमालय के सम्पादक/संस्थापक स्व. आनन्द बल्लभ उप्रेती, सन्देश सागर के संस्थापक स्व. पद्मादत्त पन्त, पिघलता हिमालय के संस्थापक स्व. दुर्गा सिंह मर्तोलिया व पत्रकार गण। सम्पादकीय विभाग में कार्य करने वाले श्री अन्डोला पीछे खड़े हैं।

धारचूला सीट पर चमाचम, गदरपुर सीट पर घमाघम मची है

-कांग्रेस से विधायक हरीश धामी खुलकर सामने हैं और भाजपा से वीरेन्द्रानन्द माहौल बना रहे हैं कि पार्टी उन्हें अवसर दे

विधानसभा चुनाव 2027 के लिये चल रही उधेड़बुन में सीमान्त की धारचूला सीट पर चमाचम देखने को मिल ही है जबकि तराई की गदरपुर सीट के लिये घमाघम। धारचूला सीट के लिये कांग्रेस से विधायक हरीश धामी खुलकर सामने हैं और उनकी चुनौती है कि चाहे जो भी चाहे मुकाबले के लिये सामने हो क्योंकि जनता का आशीर्वाद उनके साथ है। भाजपा इस सीट को लपकने की चाह रखती है और रणनीति बना रही है। पार्टी से जुड़े वीरेन्द्रानन्द अपने पक्ष में माहौल बना रहे हैं कि पार्टी उन्हें अवसर दे।

प्रदेश की गदरपुर सीट सबसे ज्यादा चर्चा में विधायक अरविन्द पाण्डे के कारण आ चुकी है। दबंग छवि के पाण्डे के बयानों और उनके मामलों को लेकर खुलेआम तीर चलने लगे हैं, जिससे भाजपा के भीतर अशान्ति है। जमीन के

-भाजपा विधायक और पूर्व कैबिनेट मंत्री अरविन्द पाण्डे के बयानों और उनके मामलों को लेकर खुलेआम तीर चलने लगे

मामले में निशाने पर आए विधायक पर उनकी ही पार्टी के स्थानीय नेता बिफर पड़े हैं और उन्हें पार्टी से हटाने की बात कह डाली। पाण्डे का अपनी ही पार्टी पर गुस्सा और फिर सीएम की तारीफ के वीडियो भी खूब प्रचारित हुए। इस बीच सांसद अनिल बलूनी, पूर्व सीएम त्रिवेन्द्र रावत की गदरपुर में इनसे मुलाकात भी नई हवा देती रही। यह मामला इतनी आसानी से निपटने वाला नहीं लगता।

पलायन सड़क से नहीं रुकेगा, इसके लिये रोजगार जरूरी

उत्तराखण्ड में खाली होते गाँव गम्भीर चिन्ता

-किशोर कुमार जोशी-

उत्तराखण्ड के पहाड़ी गाँव आज तेजी से खाली हो रहे हैं। कई गाँवों में केवल बुजुर्ग रह गए हैं, खेत बंजर हो रहे हैं और स्कूलों में बच्चों की संख्या कम होती जा रही है। पलायन अब केवल रोजगार की समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संकट बन चुका है।

लोग बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के लिए शहरों की ओर जा रहे हैं। यदि यही स्थिति रही तो आने वाले वर्षों में कई गाँव पूरी तरह खाली हो जाएंगे।

पलायन के पीछे कई प्रमुख कारण रोजगार की कमी, स्थानीय स्तर पर आय के साधनों का अभाव है। साथ ही शिक्षा और स्वास्थ्य बड़ी समस्या है। अच्छे स्कूलों और अस्पतालों की भारी कमी दूर करने के लिये लगातार कहा जा रहा है। इसी प्रकार खेती से कम आय भी पहाड़ की समस्या है। कषि उत्पादों का उचित मूल्य न मिलने से मेहनती लोग पलायन कर रहे हैं। जंगली जानवरों बन्दर और सूअरों द्वारा फसलों का लगातार विनाश किया जा रहा है। इन कारणों से पहाड़ में जीवन कठिन होता जा रहा है। जंगली जानवर तो किसानों की सबसे बड़ी समस्या बन चुके हैं। बन्दर और जंगली सूअर का आतंक बढ़ता जा रहा है। ये जानवर खेतों की फसल पूरी तरह बर्बाद कर देते हैं। किसान मेहनत करता है लेकिन फसल बच नहीं पाती। इससे लोग खेती छोड़ कर शहरों की ओर जा रहे हैं।

तुलनात्मक अध्ययन किया तो तो हमें अन्य क्षेत्रों से सीख लेनी होगी। जैसे हिमाचल सेब की बागवानी और सफल होमस्टे मॉडल, सिक्किम जैविक खेती का सफल क्रियान्वयन, कश्मीर केसर और अखरोट का मूल्य सम्वर्धन, स्विट्जरलैंड पर्वतीय पर्यटन और आधुनिक डेयरी उद्योग।

समाधान और निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि पलायन रोकने के लिए हमें केवल सड़क पर नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर गाँव पर ध्यान देना होगा। इसमें मंडुवा, झंगोरा और पहाड़ी शहद की ब्रांडिंग, होमस्टे पर्यटन और 'वर्क फ्रॉम होम' के लिए हाई-स्पीड इंटरनेट जैसी सुविधाएं अनिवार्य हैं। उत्तराखण्ड का भविष्य उसके गांवों में है। यदि गाँव खाली हो गए तो हमारी संस्कृति और परम्परा खत्म हो जाएगी। इसलिए सड़क से रोजगार जरूरी है। जब गाँव में आय होगी, शिक्षा होगी, स्वास्थ्य होगा और खेती सुरक्षित होगी, तभी पहाड़ में लोग रुकेंगे। (सहायक शिक्षक, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, जड़ापानी, पिथौरागढ़)

HIMALAYAN MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

'पिघलता हिमालय' स्थापना के 49वें वर्ष में प्रवेश की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

बसन्त तड़ागी
(उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलनकारी)
रजतदीप होटल
चम्पावत

डॉ. कीर्तिबल्लभ शक्टा
शारदा ज्योतिर्भवन पं. ताराकरस्मृति
सरस्वती विहार, खर्ककार्की, चम्पावत

अमरनाथ वर्मा
(वरिष्ठ अधिवक्ता)
मल्लीहाट,
चम्पावत

केदार दत्त थ्वाल
(से.नि.प्राध्यापक)
गोरलचौड़ रोड, चम्पावत

प्रधान पन्तनगर बीज भण्डार
गांधी चौक,
पिथौरागढ़

शगुन ड्राई फ्रूट, उप्रेती मार्केट
आंचल दूध एवं जनरल स्टोर गंगोलीहाट(पिथौरागढ़)
ललित उप्रेती

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे
धरमघर/चौकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148 www.mountainheights.in

न तेरा न मेरा Thats मो. 9458920379
APNA GHAR 6396098804
चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया
YOGA MEDITATION HOMELY FOOD LIVE MUSIC BIRTHDAY WEDDING

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236 मो.- 8958525979, 9411134775

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत
सम्पर्क 7351285555

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल
9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)